डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 1-0-2020

विषय- ऋग्वेद

ऋग्वेद संहिता

ऋग्वेद संहिता को केवल ऋग्वेद भी कहा जाता है । यह सबसे प्राचीन वेद है, क्योंकि अन्य संहिताओं में इसके अनेक मंत्र मिलते हैं। इनमें लगभग 1028 सूक्त है। इसकी भाषा में एकरूपता नहीं मिलती। भाषा का अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि ऋग्वेद किसी एक ही ऋषि की रचना नहीं है। यह विभिन्न ऋषियों द्वारा विभिन्न कालों में निर्माण की गई रचना है। ऋग्वेद संहिता के दो प्रकार से विभाग किए गए हैं। पहला-अष्टक, अध्याय और वर्ग । दूसरा- मंडल, अनुवाक और सूक्त। प्रथम विभाजन प्राचीन है और दूसरा उसकी अपेक्षा अर्वाचीन है, तथा अधिक ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक है। दूसरे विभाजन के अनुसार सारा ऋग्वेद 10 मंडलों में विभक्त है। 10 मंडलों में संग्रहित मंत्र समूह सूक्त कहलाते हैं, जिनकी संख्या 1028 है। इन सूक्तों के खंडों को 'ऋचा' कहते हैं। ऋग्वेद के संपूर्ण मंत्रों की संख्या लगभग 11,000 है, जिसमें धार्मिक कविता के साथ-साथ आख्यानों, पहेलियों गीतों आदि में अत्यंत उच्च कोटि का साहित्य विद्यमान है।

शाखाएं- ऋग्वेद में 5 शाखाओं का उल्लेख मिलता है जिनके नाम क्रमश इस प्रकार है- 1. शाकल 2.बाष्कल 3. आश्वलायन 4. सांख्यायन 5. मांडूकायन । परंतु इस समय केवल प्रथम शाकल शाखा ही उपलब्ध है ।

प्राय: सिद्धांत तो यह है कि किसी वेद संहिता की जितनी शाखाएं होगी उतने ही ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद भी होंगे, परंतु इस समय वैदिक साहित्य का अधिकांश भाग लुप्त हो गया है। अतः समस्त साहित्य के उपलब्ध न होने के कारण यह क्रम नहीं रहा । अब तो यह देखा जाता है कि शाखा किसी संप्रदाय की है तो ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद किसी दूसरे संप्रदाय विशेष के जोड़ दिए गए हैं। ऋग्वेद संहिता के केवल दो ब्राह्मण, दो आरण्यक तथा दो उपनिषद मिलते हैं जिनके नाम इस प्रकार है- 1. ऐतरेय ब्राह्मण तथा कौषीतकि ब्राह्मण 2. ऐतरेय आरण्यक तथा कौषीतकि आरण्यक, और 3. ऐतरेय उपनिषद तथा कौषीतकि उपनिषद । इनके अतिरिक्त एक आश्वालायन श्रौतसूत्र भी मिलता है, जिसका सम्बन्ध ऋग्वेद संहिता से है ।